P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-3, February-2019

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

कृष्ण–काव्य में सौन्दर्य–बोध

अरुण कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सम्भल, उ0प्र0

सारांश

सृष्टि में सौन्दर्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सरस व कोमल हृदय सहज ही सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट होता है। सौन्दर्य का आस्वाद निर्वयक्तिक होता है। यह 'स्व' और 'पर' की भावना से पूर्णतः मुक्त होता है। सौन्दर्य की अनुभूति के मानसिक धरातल पर पहुँचकर मनुष्य की भौतिकतावादी दृष्टि पूर्णतः समाप्त हो जाती है। मनुष्य अपनी रुचि, संस्कार, शिक्षा, स्मृति, कल्पना के अनुरूप ही सौन्दर्य की अनुभूति करता है। किसी कवि की रचना में सौन्दर्याभिव्यक्ति उसके अन्तर्जगत का सहज निदर्शन होता है। विश्व के समस्त वाड.मय में कवियों ने स्व–रुचि के अनुरुप सौन्दर्य के विभिन्न उपादानों को अपने काव्य का विषय बनाया है। जान कीट्स, वर्डसवर्थ आदि पाश्चात्य कवियों ने रूप सौन्दर्य का चित्रण किया है। संस्कृत साहित्य के समस्त कवियों ने अपने काव्य में रूप–सौन्दर्य के चित्रण को प्रमुख विषय बनाया है। भक्तिकालीन कृष्ण कवियों ने मानवीय रूप–सौन्दर्य को भौतिकता के धरातल से ऊपर उठाकर आध्यात्मिकता की ऊँचाई पर प्रतिष्ठित किया, जहाँ पर पहुँचकर मनुष्य का सौन्दर्यबोध ''रसो वै सः'' के परम आनन्द की अनुभूति करने लगता है।

मुख्य शब्द : निर्वैयक्तिक, संकल्पना, अभिवृत्ति, सौन्दर्यबोध, सौन्दर्याभिव्यक्ति, स्निग्ध, सिक्त, हृदयग्राही, पाग, कुलही , उपरौना, कंचुकी, ओढ़नी , शीशफूल, कंठश्री, परिमार्जित, उदात्त

प्रस्तावना

कविता की उत्पत्ति ही सौन्दर्य और संवेदना के गर्भ से हुआ है। महर्षि बाल्मिकि का सहज करुण हृदय यदि क्रौंच पक्षी के बध से द्रवित न हुआ होता तो 'प्रथम श्लोक'[1] की उत्पत्ति न हुई होती। तब से आज तक इस करुण–कलित हृदय–स्पन्दन की रस रूपी अजस्र–धारा विविध काव्यों से होकर प्रवाहित हो रही है। आदि कालीन कवि वीर रस में आनन्द का अवगाहन करते रहे तो मध्यकालीन कवि भक्ति की स्निग्ध और पवित्र आनन्द के रस से अभिभूत होकर अपने अभीष्ट राम और कृष्ण आदि के सौन्दर्य में रस का पान करते रहे। कृष्ण भक्त कवियों ने राधा और कृष्ण के भौतिक सौन्दर्य की सीढ़ी से आध्यात्मिक सौन्दर्य के शिखर तक का रास्ता तय किया। वे अपने इस आध्यात्मिक रस को काव्य के माध्यम से समस्त साहित्य संसार को रस सिक्त करते रहे। उन्होंने अपने साहित्य संसार में का सौन्दर्य चित्रण करते समय उनके सहज भौतिक जीवन से सम्बन्धित समस्त पहलुओं का वर्णन किया है। राधा–कृष्ण के शारीरिक सौन्दर्य, वस्त्र परिधान एवं परस्पर प्रेम का जैसा मार्मिक चित्रण कृष्ण भक्ति साहित्य में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। कृष्ण–भक्त भौतिक सौन्दर्य के सोपान से आध्यात्मिक सौन्दर्य के शिखर पर पहुँचते हैं और परम आनन्द के रस का पान करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान भौतिकतावादी युग में मनुष्य अपनी सहज मानवीय संवेदनाओं को तिरोहित करता जा रहा है। मनुष्य का हृदय उसके मस्तिष्क के अधीन होता जा रहा है, जिसके फलस्वरूप उसमें सहज मानवीय गुण ,शील, सौन्दर्य, संवेदना, सम्बन्ध, सहयोग आदि के भाव समाप्त होते जा रहे हैं। धर्म व संस्कृति के प्रति आस्था एवं सम्मान, परिवार व समाज के प्रति कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व, अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक अस्मिता के प्रति संवेदनहीनता आने वाली पीढ़ी के लिये सबसे बड़ी चुनौती है। वर्तमान पीढ़ी के ऊपर पाश्चात्य एवं आधुनिकता का ऐसा कलेवर चढ़ता जा रहा है कि वह अपने मूल सभ्यता, संस्कृति, पूर्वजों के रहन–सहन, खान–पान, वस्त्र–परिधान, धर्म व आस्था सम्बन्धी ज्ञान को विस्मृत करता जा रहा है। कृष्ण काव्य में निहित सौन्दर्य–बोध को आधुनिक कलेवर में प्रस्तुत करना तथा इसके माध्यम से इन प्राचीन मूल्यों को पुनर्प्रतिष्ठित करना ही हमारा मूल उत्स है।

साहित्यावलोकन

साहित्य मनीषियों में सौन्दर्य बोध एवं चेतना विषयक चिन्तन काव्य सृजन के केन्द्र में रहा है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक जितने साहित्य लिखे गये उनके मूल में सौन्दर्य संकल्पना का सन्देश अवश्य रहा है। समकालिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं आर्थिक परिवेश के आधार पर समयानुकूल सौन्दर्य बोध के प्रतिमान में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। श्रीमद्भागवत से लेकर आधुनिक युग तक कृष्ण काव्य सृजन की सुदीर्घ परम्परा में भी समय के अनुसार सौन्दर्य बोध में परिवर्तन होता रहा है।

8वीं सदी में दक्षिण भारत में कृष्ण भक्ति का प्रचार–प्रसार अधिक था। हिन्दी में कृष्ण काव्य का प्रारम्भ जयदेव के 'गीत गोविन्द' तथा विद्यापति की 'पदावली' से माना जा सकता है। तब से लेकर अब तक बल्लभाचार्य, बिट्ठलनाथ, अष्टछाप के कवि सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, कुष्णदास, नन्ददास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, चतुर्भुज दास, निम्बार्काचार्य, श्रीभट्ट, हरिदास, परशुराम देव, हित हरिवंश गोस्वामी दामोदरदास, हरिराम व्यास, ध्रुवदास, नेही नागरीदास जगन्नाथ स्वामी, बीठल बिपुल, विहारिन दास, नागरीदास, सरसदास मीराबाई और रसखान आदि कवियों ने राधा और कृष्ण के अलौकिक सौन्दर्य का चित्रण लौकिक जीवन के उपमानों को आधार बनाकर किया जिससे यह जन सामान्य के लिये सरलता से हृदयग्राही बन सका।

कालान्तर में यह भक्ति काव्य प्रेम और शृंगार के माध्यम से लौकिक सौन्दर्य बोध की धारा अलौकिक सौन्दर्य बोध की धारा में विलीन हो जाती है। राधा कृष्ण की भक्ति उनके हृदय की मुक्त साधना और शृंगार वर्णन उनके हृदय की उन्मुक्त अभिव्यक्ति में परिणत हो जाती है।

उक्त कवियों में निहित भाव एवं कला पक्ष से सम्बन्धित विभिन्न सौन्दर्य बोधों को अनेक आलोचकों एवं समीक्षकों ने व्याख्यायित करने की कोशिश की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने आलोच्य ग्रन्थ 'सूरदास'[2] में श्रीकृष्ण के वात्सल्य, गोपियों के विरह, एवं उनके काव्यगत सौन्दर्य की समीक्षा की है, यह केवल सूरदास तक ही सीमित है। डॉ0 पूरनचन्द टण्डन ने अपने 'मध्यकालीन कृष्ण काव्य में 'सौन्दर्य चेतना'[3] पुस्तक में कृष्ण भक्त कवियों में अन्तर्निहित सौन्दर्य बोध को यथार्थ सामाजिक, सांस्कृतिक चस्में से देखने का प्रयास किया है किन्तु उसमें भी प्रारम्भिक कवियों को उचित स्थान नहीं मिल सका है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य में मधुरोपासना'[4] में शृंगारिक सौन्दर्य बोध को प्रमुखता दी गयी है। डॉ0 एन0जी0 देवकी के ग्रन्थ 'हिन्दी कृष्ण काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन'[5] मे काव्यगत सौन्दर्य की समीक्षा तो की गयी है किन्तु वर्तमान परिवेश के अनुकूल उसमें सामाजिक व सांस्कृतिक पहलू पर प्रकाश नहीं डाला गया है।

इस शोध–पत्र में इन भक्त कवियों के काव्य में वर्णित पवित्र–पियूष सौन्दर्य बोध को वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक सन्दर्भों मे पुनर्मूलयांकित एवं प्रतिष्ठित करने का सद्प्रयास किया गया है।

कृष्ण–काव्य में सौन्दर्य–बोध

सृष्टि और सौन्दर्य का अद्भुद सम्बन्ध है। सौन्दर्य एक अनुभूति परक संकल्पना है। मनुष्य सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ संरचना है। मनुष्य में ही सौन्दर्य तथा असौन्दर्य में अन्तर करने की क्षमता है। ज्यों–ज्यों मानव समाज एवं संस्कृति विकसित होती गयी अथवा यों कहें कि परिवर्तित होती गयी त्यों–त्यों सौन्दर्य के मानक में भी कमोवेश परिवर्तन होता गया। यदि कहा जाय कि सृष्टि के केन्द्र में मानवीय सभ्यता है और मानवीय सभ्यता के केन्द्र में सौन्दर्य है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मनुष्य का सहज सौन्दर्य के प्रति सहज आकर्षण उसकी संवेदना के मानक को तय करता है। 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की परिकल्पना मनुष्य की इसी अभिवृत्ति का प्रतिफल है।

मनुष्य अपने परितः परिवेश, समाज और सृष्टि के विविध तत्त्वों के प्रति निरपेक्ष होकर नहीं रह सकता। प्रकृति के विविध सौन्दर्य भाव उसके मन को सहज ही आकृष्ट कर ही लेते हैं। नवजात शिशु की सहज चपलता, प्रातः कालीन उषा की लालिमा, रंग–विरंगे पुष्प, पक्षियों का कलरव, नव किसलय पर मोती की तरह चमकते तुषार विन्दु किस सहृदय को स्वतः ही अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर लेंगी। संक्षेप में कहें तो 'सुन्दं राति इति सुन्दरं तस्य भावः सौन्दर्यं' अर्थात 'सुन्द' का जो आनयन करता है वही सुन्दर है और उसका भाव जहाँ पर हो वही सुन्दर कहलाता है। सौन्दर्य शब्द सुन्दर, रुचिर, चारु, सुषमा, साधु, शोभन, कान्त, मनोरम, रुच्य, मनोज्ञ, श्री, मंजु, मंजुल, ललित, सुष्ठु, शब्दों की अवधारणा को कमोवेश धारण करता है। यद्यपि ये सभी शब्द प्रकृति सौन्दर्य, भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, अभिव्यक्ति सौन्दर्य, मूल्य सौन्दर्य आदि अपने विभिन्न स्तरों में ही प्रयुक्त होते हैं। सौन्दर्य वस्तुगत और आत्मगत सौन्दर्य का प्रतिफल है।

यह सौन्दर्य जब किसी आराध्य देव में परिलक्षित होने लगें तो आराधक से सौन्दर्य का कोई भी पक्ष अछूता नहीं रह पाता है। कृष्ण भक्ति काव्य में पुरुष, नारी एवं बाल सौन्दर्य का जैसा अद्भुत चित्रण है वैसा कदाचित अन्यत्र. नहीं मिलता। विद्यापति ने राधा और कृष्ण के सांगोपांग सौन्दर्य का चित्रण किया है। सूरदास, कृष्णदास, नन्ददास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी आदि बल्लभ सम्प्रदाय के अष्टछाप कृष्ण भक्त कवियों की दृष्टि राधा के रूप सौन्दर्य की अपेक्षा आराध्य कृष्ण के रूप सौन्दर्य में अधिक रमी है। उन्होंने अपने काव्य में अपने आराध्य श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य को अत्यधिक आकर्षक ढंग से वर्णित किया है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय के कवियों विशेषकर हित हरिवंश आदि ने श्रीकृष्ण की अपेक्षा राधा के सौन्दर्य को विशेष महत्व दिया है। कृष्ण का सौन्दर्य राधा के साहचर्य के कारण अधिक वर्णित हुआ है। इन कवियों ने मानवीय सौन्दर्य का वर्णन अत्यन्त हृदयग्राही ढंग से किया है। पुरुष के सौन्दर्य में बलिष्ठता, तेजस्विता, कर्तव्यनिष्ठा, तथा नारी सौन्दर्य में कोमलता, विलासिता, रमणीयता, सुडौल शारीरिक संरचना, अंग कान्ति आदि का वर्णन है।

राधा और कृष्ण के अंग प्रत्यंग वर्णन के अतिरिक्त कृष्ण भक्त कवियों ने उनके वस्त्र और परिधानों का भी वर्णन किया है। श्रीकृष्ण की पगड़ी , कुलही,

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-3, February-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

पिछौरा, दुकूल, बागा, जामा, पीताम्बर, आदि का वर्णन अत्यन्त मार्मिक ढंग से किया गया है। चतुर्भुज दास ने कृष्ण की पाग,(पगड़ी) की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहा है–

''स्वेत जरी सिर पाग लटकि रही कलंगी तामें लाल''[6]।

कुलही एक प्रकार का सिरो वस्त्र है, जब श्रीकृष्ण इसे धारण करते हैं तो उनका सौन्दर्य देखते ही बनता है। रीति कालीन कवि वेनी प्रसाद ने कृष्ण के मोर के पंखों से बने कुलही का उल्लेख किया है। नन्द की गोद में बैठे हुए कुलही लगाये हुए कृष्ण की शोभा देखते ही बनती है–

''कुलही दै उलही श्याम रूप शोभा
बैठे कान्ह ब्रज पति की गोद।''[7]

पिछौरा, उपरौना, पुरुष के कटि भाग में बॉधे जाने वाले वस्त्र को कहते हैं। कृष्ण के कमर में बॅधा हुआ उपरौना अत्यन्त सुशोभित हो रहा है–

''तनसुख कौ कटि बॉधे पिछौरा,
ठाढ़े हैं कर कमल लिए ।''[8]

इसके अतिरिक्त दुकूल बागा–जामा, सूथन–इजार, पीताम्बर आदि के सौन्दर्य का कृष्ण भक्त कवियों ने अद्‌भुत वर्णन किया है। इसमें पीताम्बर कृष्ण का सबसे प्रिय परिधान है। सूरदास, नन्ददास, रसखान, मीराबाई, बिहारी आदि ने पीताम्बर के सौन्दर्य का प्रमुखता से चित्रण किया है। कवि बिहारी कहते हैं–

'' सोहत ओढ़े पीत–पट स्याम सलोने गात,
मनौ नीलमणि सैल पर आतप पर्‌यो प्रभात।''[9]

कृष्ण भक्त कवियों ने केवल कृष्ण के सौन्दर्य का ही चित्रण नहीं किया बल्कि राधा के सौन्दर्य का भी नख–शिख वर्णन किया है। ये कवि किशोरी राधा, गोपिकाओं, होली, झूला पनघट, दानलीला, चीरहरण, रासलीला, के अवसर पर पहने जाने वाले वस्त्रों, जैसे–फरिया, (अधोवस्त्र) सारी, लहंगा, सूथन, कंचुकी, ओढ़नी आदि का सुन्दर वर्णन किया है। विभिन्न वेशभूषाओं में उनके अलग–अलग सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है।

इनमें कंचुकी और सारी का विशेष वर्णन प्रायः सभी कवियों ने किया है– राधा के कनक वर्ण पर नील वर्ण की सारी विशेष शोभा पाती है। काली सारी और लाल कंचुकी से कवि को उदधि से निकलते उदीयमान सूर्य का स्मरण हो आता है। कवि हित हरिवंश ने इस सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कहा है–

''चौकि चमकि कंचुकि सारी कारी रातें रंगरी।
अरुन किरन रही छाइ, उदधि तें निकसति प्रात
पतंगरी।''[10]

कृष्ण काव्य में आभूषण सौन्दर्य का अद्‌भुत चित्रण है। आभूषण के अभाव में तो सौन्दर्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती । आचार्य प्रवर कवि केशव भी यही कहते हैं।–

''भूषन बिनु न बिराजहीं कविता बनिता मित्त।'[11]

श्रीकृष्ण के आभूषणों में मुकुट, कुण्डल, कर्णफूल, नासमुक्ता–बेसर, कौस्तुभ मणि , एवं मुक्ताहार, वलय, कंकण, मुद्रिका, किंकिणी, नूपुर, पाजेब आदि का सुन्दर वर्णन है। श्रीकृष्ण के बाल्य काल से लेकर किशोरावस्था तक के सौन्दर्य का कवियों ने वर्णन किया है। परमानन्द श्रीकृष्ण के मोर मुकुट तथा अन्य आभूषणों के पहनने से जो छटा बिखरती है उसका वर्णन करते हुए कहते हैं–

''मोर मुकुट मुरली पीताम्बर ,
अरु गुंजा बनमाल।''[12]

गोविन्द स्वामी कहते हैं–

''कटि किंकिनी कर, कंकन,
अंगद बनमाला पदकमल लुभाई।''[13]

इसी प्रकार राधा और अन्य गापियों के आभुषणों का चित्रण सभी कृष्ण भक्त कवियों ने किया है। सिर से लेकर पैर तक जितने भी आभूषण स्त्रियों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं लगभग सभी आभूषण राधा और अन्य गोपियों के सौन्दर्य वर्णन हेतु प्रयोग किया गया है। सिर के आभूषणों में मोती, शीशफूल, बिन्दी चन्द्रिका, टीका, मॉगपारी, बेना, आदि आभूषण धारण करने से राधा की कान्ति और बढ़ जाती है।

नासिका के आभूषण नासामुक्ता, बेसर, नथ, लवंग आदि से गोपियों के सौन्दर्य देखते ही बनते हैं। बिहारी ने नथ में गठित दो मोतियों का उल्लेख किया है–

'' इहि द्वै ही मोती सुगथ तूॅ, नथ गरब निसॉक।
जिहि पहिरे खग–दृग ग्रसति, लसति, हॅसति सी नॉक।''[14]

कान के आभूषणों के में तंटक, कुण्डल, खुटिला, खंभी, तर्‌यौना, कर्णफूल, झूमक, गले के आभूषणों में–कंठश्री, हार, चौकी , माला, हमेल, दुलारी, हाथ के आभूषणों में –वलय, कंकण, बाजूबंद, चूड़ी, पहुॅची, नवग्रही, मुंदरी, कर–पान, , कमर के आभूषणों में किंकिनी, क्षुद्र घण्टिका, मेखला, करधनी , रसना, पैर के आभूषणों में पैजनी , पायजेब, पायल, जेहरी, नूपुर, मंजीर, अनवट, बिछिया आदि आभूषण राधा के सौन्दर्य को और निखार देते हैं–

''पायल नूपुर की झनक , होति हैं मन्दहिं मन्द।
मनु सावक, कल, हंस के बोलत भरे अनन्द।।''[15]

राधा के पॉव की बिछिया मंद और मधुर आवाज में बजती है। कवि ने इस ध्वनि को हंस के शावक की अति मृदु वाणी सा कहा है। देव ने इसके बजने का उल्लेख किया है–

''कवि देव हरे बिछियानु बजाइ,
लजाइ रहे पगु डोलति पै।
गुरु डीठि बचाइ लचाइ के लोचनि ,
सो मुख खोलनि पै।''[16]

अनेक प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधन शरीर पर लगाने अथवा लेप करने से शरीर हृष्ट–पुष्ट एवं सुन्दर दिखाई देता है। कवियों ने राधा और कृष्ण द्वारा प्रयोग किये जाने वाले उबटन, चन्दन, कस्तूरी, कुंकुम, अरगजा, कर्पूर, सुगन्धित तेल, एवं इत्र आदि का वर्णन किया है।

यद्यपि राधा और कृष्ण स्वतः ही इतने सुन्दर एवं कान्तिमान हैं, फिर भी कृष्ण भक्त कवियों ने उन्हें मानव सुलभ सौन्दर्य मानकर ही चित्रण किया है। उनका सहज, नैसर्गिक, मानव निर्मित तथा अभिमण्डित सौन्दर्य का मणिकांचन प्रयोग राधा और कृष्ण के सौन्दर्य को अलौकिक दीप्ति एवं कान्ति से भर देता है।

कृष्ण काव्य में बाल सौन्दर्य का अद्‌भुत चित्रण है। किशोरावस्था एवं यौवनावस्था की लीलाओं के चित्रण

में कवियों का मन अधिक रमा है। विशेष रूप से विद्यापति पदावली में विद्यापति ने राधा और कृष्ण के किशोरावस्था एवं यौवनावस्था की लीलाओं का चित्रण किया है। सूर सागर में कृष्ण के वात्सल्य और साख्य रूप को महत्ता दी गयी है। कृष्ण की बाल्यावस्था का चित्रण करते हुए सूरदास कहते हैं–

''सोभित कर नवनीत लिए।''
घुटुरुवनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।''

बाल कृष्ण के नेत्र मुख, अधर, कान, नासिका आदि सभी एक निश्चित अर्थ लिए हुए होते हैं। बालक कृष्ण के लघु आकार वाले शरीर के हाथ और पैर भी छोटे –छोटे हैं। नखों की ज्योति कमलदल पर चमकते मोती की तरह हैं। वात्सल्य सम्राट सूर ने अपनी बन्द ऑखों से श्रीकृष्ण के बाल सौन्दर्य का जैसा अनोखा चित्रण किया है, वैसा किसी अन्य कृष्ण भक्त ने नहीं। सूरदास द्वारा चित्रित बाल सौन्दर्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है किसी एक दृष्टिकोण से जानना व समझना सम्भव नहीं है।

केवल सूरदास ही नहीं अपितु कुम्भनदास, परमानन्द दास, छीतस्वामी, गोस्वामी चतुर्भुज दास आदि समस्त कृष्ण भक्त कवियों ने राधाकृष्ण के सौन्दर्य का विशेष वर्णन किया है। रसखान और मीराबाई का कृष्ण सौन्दर्य तो केवल बाह्य सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं हैं अपितु उनके अन्तः सौन्दर्य का विशुद्धतम और पवित्र वर्णन है। उनके सौन्दर्य के सागर में गोते लगाकर स्वयं को भूल जाते हैं और कृष्ण के साथ एकाकार हो जाते हैं।

कृष्ण काव्य में कृष्ण के उदात्त एवं विराट सौन्दर्य को अति रमणीय ढंग से प्रस्तुत कर उसे आनन्ददायक बनाया गया है। उनके विराट रूप सौन्दर्य का दर्शन करके भक्त आश्चर्य चकित, मोहित, अचम्भित हो जाते हैं। देवकी को साक्षात् दर्शन देना, पालने में पैर के अंगूठे को मुँह में रखते ही तुरन्त प्रलय का दृश्य, माटी खाते समय ब्रह्माण्ड की लीला का दर्शन, गोवर्धन धारण, कालिया दमन अनेक असुरों का बध करते समय उनके विराट सौन्दर्य के रस का पान भक्त कवि पूर्ण आनन्द के साथ लेते हैं।

कृष्ण भक्त कवि प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण करने में भी सिद्धस्त हैं। जहाँ भी भक्त कवियों की रुचि रमी है वहाँ राधा कृष्ण के साथ प्रकृति का तादत्म्य स्थापित करते हैं। भौरों का लताओं के साथ गुंजार करने और पवन के झोकों से लहलहाती लताओं से मन मोहित हो जाता है। कवि विद्यापति कृष्ण के विरह को प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करके चित्रित करते हैं–

''विरह व्याकुल, व्याकुल तरुवर पेखल नन्दकुमार रे,
नील नीरज नयन सयं सखि ढरह नीर अपार रे।
बहइ मन्द सुगन्ध सीतल मन्द मलय समीर रे,
जनि प्रलय कालक प्रबल पावक दहइ समीर रे।''[17]

कृष्ण भक्त कवियों ने राधा और कृष्ण को अनुपम सौन्दर्य से युक्त माना है–

''थलज, जलज, झलमलत, ललित बहु भवर उड़ाये,
उड़ि–उड़ि परत पराग, विमल छवि कहत न आवे।''[18]

मानव हृदय अत्यन्त संवेदनशील एवं सौन्दर्याकांक्षी है। भक्त अथवा काव्य रसिक स्वतः ही रस का अवगाहन करने लगता है। मध्यकालीन भक्त कवियों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति भाषिक प्रसाधनों से भावक के समक्ष उपस्थित होती है। अभिधा, व्यंजना, तथा लक्षणा शब्द शक्तियों का वैशिष्ट्य, ओज, प्रसाद और माधुर्य गुणों की रमणीयता, अलंकारों की सुन्दरता ,छन्दों का संगीत, उक्ति वैचित्र्य, अप्रस्तुत विधान का चमत्कार, प्रतीकों की अह्लादिता, तथा भाषा का परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप अभिव्यक्ति में आलौकिक सौन्दर्य की सृष्टि कर देते हैं। मध्यकालीन कृष्ण काव्य का अभिव्यक्ति सौन्दर्य इन्हीं भाषिक उपकरणों के सन्तुलित एवं समन्वित प्रयोग का प्रतिफलित रूप है। मध्यकालीन कवियों ने भावों के अनुरूप शब्दों का चयन करके कृष्ण भक्ति काव्य को हिन्दी साहित्य में जो समादृत एवं विलक्षण स्थान प्रदान किया वह किसी अन्य युग की कविता कदापि नहीं कर सकती । कवियों की अनूठी कल्पनाओं, संगीत की मधुर लहरियों , अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग ने कृष्ण काव्य को उदात्त बना दिया है।

निष्कर्ष

सृष्टि में सौन्दर्य की सबसे गहरी समझ मनुष्य को ही है। मनुष्य ही इहलौकिक अथवा पारलौकिक सौन्दर्य का जन्मदाता भी है और रस का पान करने वाला भी। साहित्य मनीषियों ने सौन्दर्य बोध को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा, समझा एवं व्याख्यायित किया। सर्वाधिक विशुद्ध सौन्दर्य की परख कृष्ण भक्त कवियों को है जो राधा और कृष्ण की भक्ति की छाया में परिलक्षित होता है। राधा और कृष्ण यद्यपि उनके आराध्य हैं फिर भी वे जब उनकी भक्ति में लीन होकर काव्य सृजन करते हैं, तब वे मात्र आध्यात्मिक आराध्य ही नहीं रह जाते अपितु सहज सांसारिक बाल सुलभ–सौन्दर्य, युवा राधा और कृष्ण की रास लीला का सौन्दर्य, उनके वस्त्र एवं परिधान, आभूषण, शारीरिक सौष्ठव आदि का चित्रण कुशलता से करते हैं। भौतिक, प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य बोध का जैसा अद्भुत समन्वय कृष्ण–भक्ति –काव्य में मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *''मा निषाद प्रतिष्ठाम त्वमगमः शाश्वती समा, यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहिताम्'' रामायण बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक–15, गीता प्रेस, गोरखपुर, उ0प्र0*
2. *शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र (2007), 'सूरदास', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, भारत*
3. *टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द (प्रथम संस्करण 2004 ई0), 'मध्यकालीन कृष्ण काव्य मे सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली*
4. *चतुर्वेदी ,आचार्य परशुराम (संस्करण 2018 वि0), 'हिन्दी साहित्य में मधुरोपासना', भारती भंडार, इलाहाबाद,*
5. *देवकी, डॉ0 एन0जी0 (1989),'हिन्दी कृष्ण काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन', सूर्य प्रकाशन, दिल्ली,*
6. *चतुर्भुजदास, पद संग्रह, पद संख्या–30, उद्धृत– टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द, (प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण*

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-3, February-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–195

7. घनान्द ग्रन्थावली, पृष्ठ–450, उद्धृत–टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–196
8. चतुर्भुजदास, 'पद संग्रह', पद सं0–107, उद्धृत–टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–196
9. सिंह, डॉ0 विजय पाल (1998), 'बिहारी वैभव', दोहा सं0–23, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, पृष्ठ–112
10. गदाधर भट्ट की वाणी, पद सं0–39, उद्धृत–टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द, (प्रथम संस्करण–2004), कृष्ण 'काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–199
11. केशवदास, 'रामचन्द्रिका', द्वारा, सम्पादित–भगवानदीन, लाला, (संस्करण–1989), प्रकाशन–नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, पृष्ठ–162
12. परमानन्द सागर, पद सं0–233, उद्धृत– टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–204
13. गोविन्दस्वामी, पद सं0–13, उद्धृत– टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–206
14. जगन्नाथ दास रत्नाकर, 'बिहारी रत्नाकर', दोहा–306, प्रकाशन– ग्रन्थ शिवाला वाराणसी, उ0प्र0
15. ध्रुवदास, बयालीस लीला , पृष्ठ–114, टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–212
16. देव, 'भाव विलास', पद सं0–103, उद्धृत– टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004 ई0), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–213
17. विद्यापति, 'विद्यापति पदावली', पद सं0–47, सम्पादक– रामवृक्ष बेनीपुरी, ,(संस्करण–, 2009 ई0) राजकमल प्रकाशन समूह, दिल्ली
18. रास पंचाध्यायी, प्रथम अध्याय, पद–36, उद्धृत– टण्डन, डॉ0 पूरनचन्द,(प्रथम संस्करण–2004), 'कृष्ण काव्य में सौन्दर्य चेतना', संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–385